डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
Date 16/04/20
Page

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
शिवराजविजय - प्रथम निश्वास

पं० अम्बिकादत्त व्यास का जीवनवृत्त

पं० अम्बिकादत्त व्यास ने प्रसिद्ध पुस्तक 'बिहारी बिहार' के अन्त में 'संक्षिप्त निजवृत्तान्त' नामक शीर्षक के अन्तर्गत अपने जीवनवृत्त का विवरण प्रस्तुत किया है। इस वृत्तान्त के अनुसार व्यास जी के पितामह राजाराम जी थे, जो प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। जयपुर से आकर काशी में रहने लगे थे। इनके पिता का दुर्गादत्त था, जिन्हें दत्त कवि भी कहा जाता था। ये कभी काशी तो कभी जयपुर रहते थे। व्यास जी का जन्म जयपुर में ही चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 (सन् 1858ई०) में हुआ था।

तारान्चरण तर्करत्न, कुन्जलाल वाजपेयी, कैलाशचन्द्र भट्टाचार्य, राममिश्र और विश्वनाथ कविराज आदि गुरुओं से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी।

पं० अम्बिकादत्त व्यास बाल्यकाल से ही महान् प्रतिभा से ओत-प्रोत थे। 10 वर्ष की अल्प अवस्था में ही इन्होंने काव्य रचना प्रारम्भ कर दिया था। व्यास जी ने 11 वर्ष की अवस्था में तत्कालीन धर्म सभा के द्वारा आयोजित परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया। 11 वर्ष की अवस्था

Scanned with CamScanner

में ही इनकी माता का देहावसान हो गया। बाल विवाह के कारण 13 वर्ष की अवस्था में व्यास का पाणिग्रहण संस्कार हो गया तथा 17 वें वर्ष में पिता के भी स्वर्गवासी हो जाने से व्यास जी पर गृहस्थी का पूर्ण भार आ पड़ा।

व्यास जी एकओर सांख्य, योग वेदान्त और आयुर्वेद का गम्भीर अध्ययन करते थे तो दूसरी ओर सितार, जलतरङ्ग, आदि वाद्यों का भी अभ्यास करते थे। वक्तृता, शास्त्रार्थ तथा कविता करने में व्यास जी को इतना अभ्यास हो गया था कि ये एक घड़ी (60 मिनट) में 100 (सौ) श्लोक बना लेते थे। इसलिए संवत् 1938 में (1881ई) काशी ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा ने इन्हें 'घटिका-शतक' की उपाधि प्रदान की। दूसरी महत्वपूर्ण इनकी विशेषता यह थी कि सौ प्रश्नों को सुनकर सभी प्रश्नों का क्रमानुसार उत्तर देने की अद्भुत क्षमता इनको प्राप्त थी। जिसके कारण इन्हें 'शतावधान' की भी उपाधि प्रदान की गई। पं० अम्बिका-दत्त व्यास की पचहत्तर रचनाओं में शिवराज-विजय (उपन्यास) सामवतम (नाटक) गुप्तासुधि प्रदर्शनम, अबोधनिवारण तथा बिहारीविहार (हिन्दी काव्य) प्रमुख हैं।

जीविका की दृष्टि से व्यास जी संवत् 1950 में मधुबनी संस्कृत स्कूल

के अध्यक्ष होकर बिहार गये। वहाँ इन्होंने बिहार संस्कृत समाज की स्थापना की जो आज भी संस्कृत के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। संवत् 1950 में ये छुट्टी लेकर भारत भ्रमण पर चले गये। भ्रमण के दौरान पूरे देश में इनके सम्मान में सभाएँ हुईं। अन्त में काशी की महासभा में इन्हें 'भारतरत्न' की उपाधि मिली। पीयूष प्रवाह आदि पत्रिकाओं का भी इन्होंने सम्पादन किया। मार्ग शीर्ष कृष्ण 13, संवत् 1957 (1900 ई०) में व्यास जी का निधन हो गया।

पं० अम्बिकादत्त व्यास जी अल्पायु अर्थात् 10 वर्ष की अवस्था से ही ग्रन्थ रचना प्रारम्भ कर दी थी। इनकी पहली रचना 'प्रस्तार दीपक' (हिन्दी) है। इन्होंने बिहारी बिहार नामक ग्रन्थ में संवत् 1945 तक के स्वरचित 78 ग्रन्थों का पूरा विवरण प्रस्तुत किया है। कौन सी पुस्तक कब प्रारम्भ किया, कब समाप्त हुआ तथा कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ अथवा प्रकाशित नहीं हुआ आदि का इस ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक विवरण प्रस्तुत किया है। इनके द्वारा रचित संस्कृत के कुछ ग्रन्थों का विवरण अधोलिखित है—

Scanned with CamScanner

(1) गणेश शतकम् (2) कथाकुसुमम् (3) सांख्य सागरसुधा (4) पातञ्जल प्रतिबिम्बम् (5) साम्वतनाटकम् (6) संस्कृताभ्यासपुस्तकम् (7) प्राकृतप्रवेशिका (8) प्राकृतगूढ़शब्दकोषः (9) अनुष्टुब्लक्षणोद्धारः (10) रेखागणितम् (श्लोकबद्ध) (11) रत्नपुराणम् (12) शिवराज विजयः (13) बालव्याकरणम् (14) सहस्रनाम रामायणम् (15) गद्यकाव्यमीमांसा (16) गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम् (17) समस्यापूर्ति सर्वस्वम् (18) द्रव्यस्तोत्रम् (19) दुःखद्रुमकुठारः (20) आर्यभाषा सूत्रधारः (21) कुण्डलीदर्पणम् (22) इतिहास संक्षेपः (23) पुष्पोहारः (24) रत्नाष्टकः (25) अवतारकारिका इति ।